ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 11 | ISSUE - 5 | JANUARY - 2025

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

असहयोग आन्दोलन में नारी शक्ति का योगदान (मध्यप्रांत के विशेष संदर्भ में)

डॉ. धनाराम उइके
सहायक प्राध्यापक– (इतिहास)
शासकीय पेंचव्हेली स्नातकोत्तर महाविद्यालय, परासिया, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

शोध सारांश

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में औपनिवेशिक भारत के अंतर्गत राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास दीर्घकालिक, संघर्षपूर्ण एवं अनेक चुनौतियों से भरा रहा। ब्रिटिश शासन से मुक्ति हेतु भारतीयों ने राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर अपनी माँगों को लेकर आन्दोलनों, हड़तालों, विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से अपना असंतोष व्यक्त किया। ब्रिटिशों की साम्राज्यवादी एवं शोषणकारी नीतियों के चलते, भारतीय समाज का प्रत्येक वर्ग अत्यधिक कठिनाईयों एवं समस्याओं का सामना कर रहा था। परंतु जनता में असंतोष की भावना एकाएक ही नवीन चेतना को जन्म नहीं देती। वास्तव में यह जन असंतोष विभिन्न समयों पर विद्रोह के विभिन्न पहलुओं के रूप में उभरकर सामने आया। कभी यह सरकारी अधिकारी के विरूद्ध था तो कभी जमींदार के और कभी किसी नये कानून के। लिहाज़ा भारत में राष्ट्रीय चेतना के उद्भव के पीछे प्रशासन का संगठित स्वरूप, संचार व्यवस्था, छापाखाना का विकास, नवीन शिक्षा प्रणाली, अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति, बौद्धिक जागरण जैसे अनेक कारण उत्तरदायी थे।[1] अतः 1915 में भारत में गांधीजी के आगमन के बाद उन्होंने अपने ढ़ंग से राष्ट्रीय आन्दोलन की कमान संभाली और ब्रिटिशों की अन्यायपूर्ण नीतियों के विरूद्ध आम जनमानस एवं क्षेत्रीय नेताओं के समर्थन से, असहयोग आन्दोलन में अपनी निर्णायक भूमिका अदा की। इस आन्दोलन में भारत के मध्यप्रांत की महिलाओं ने भी अपना अमूल्य योगदान दिया।

शब्द कुंजी : असहयोग आन्दोलन, महात्मा गांधी, मध्यप्रांत, औपनिवेशिक, आदि।

भूमिका

असहयोग आन्दोलन की गणना विश्व इतिहास के बड़े जन–आन्दोलनों में की जाती है। प्रथम विश्वयुद्ध में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षार्थ युध्द में भाग लेने के दावे और विश्वयुद्ध में भारत के सक्रिय सहयोग के वातावरण में ब्रिटिश सरकार से भारतीयों को स्वशासन एवं होमरूल दिये जाने की आशा थी तथा होमरूल आन्दोलन के बाद 1917 की मान्टेग्यू की घोषणा से इसकी आशा भी की जा रही थी, किन्तु युद्ध में जीत हासिल कर लेने के बाद इंग्लैण्ड की और ब्रिटिश भारत की सरकार अपने वादों से पलट गई और भारत में राजनीतिक दमन का एक नया दौर आरंभ हो गया। रॉलेट एक्ट तथा जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद भारत में राजनीतिक असंतोष चरम सीमा पर पहुँच गया।

1 अगस्त, 1920 को गाँधी जी ने अपनी ओर से असहयोग आन्दोलन की औपचारिक शुरूआत की। गाँधीजी ने 22 जून को ही वाइसराय को नोटिस दिया था, जिसमें स्पष्टतः लिखा था कि ''कुशासन करने वाले शासक को सहयोग देने से इन्कार करने का अधिकार हर आदमी को है।''[2] सितम्बर 1920 को असहयोग

आन्दोलन के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए कलकत्ता में कांग्रेस कार्यसमिति का आयोजन किया गया। इसी अधिवेशन में गाँधी जी ने असहयोग प्रस्ताव पेश किया। गाँधी जी के इस प्रस्ताव का विरोध एनी बीसेण्ट, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, मदन मोहन मालवीय, देशबन्धु चित्तरंजन दास, विपिनचंद्र पाल, मो. अली जिन्ना, शंकर नायर तथा सर नारायण चन्द्रवरकर ने किया, किंतु अली बंधुओं एवं मोतीलाल नेहरू के समर्थन में असहयोग प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।[3] इस आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य सरकारी उपाधि एवं अवैतनिक सरकारी पदों का त्याग, विदेशी सामानों का पूर्णतः बहिष्कार, सरकारी स्कूलों, कॉलेजों का बहिष्कार, वकीलों द्वारा ब्रिटिश न्याय व्यवस्था का बहिष्कार आदि था।

असहयोग आन्दोलन में मध्यप्रान्त की नारी शक्ति

गाँधीजी के असहयोग के आव्हान पर देश की संपूर्ण जनता की ओर से भरपूर प्रत्युत्तर मिला और भारत के विभिन्न नगरों में हड़तालें और शांत प्रदर्शन होने लगे। अतः इस आन्दोलन में मध्यप्रान्त के सभी वर्गों ने बढ–चढ़कर हिस्सा लिया, प्रसन्नता का विषय यह था कि जहाँ मध्यप्रांत की महिलायें इसके पूर्व घर की चारदीवारी से नहीं निकलती थीं, वहीं इस आन्दोलन में मध्यप्रांत की महिलाओं ने बढ़–चढ़कर अपनी सक्रिय भूमिका अदा की।

मध्यप्रदेश के साथ गाँधीजी का प्रथम प्रत्यक्ष सम्पर्क सन् 1918 में हुआ, जबकि इन्दौर में होने वाले अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में पधारे।[4] गाँधीजी का यह इन्दौर प्रवास विशुद्ध रूप से साहित्यिक था, इस प्रवास के दौरान अपने आप को पूर्णतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास और प्रसार के विषय तक ही सीमित रखा था। 21 दिसम्बर 1920 को गाँधीजी, पं. सुन्दरलाल शर्मा के साथ कलकत्ता से रायपुर पधारे, इस समय उनके साथ अली–बंधुओं में से एक मौलाना शौकत अली भी थे।

रायपुर में गाँधीजी ने महिलाओं की सभा को संबोधित किया और इस सभा में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया, जुलूस निकाले, धरने दिये, गिरफ्तारियाँ दी, किंतु कुछ अग्रणी महिलाओं में श्रीमती भागीरथी बाई तथा श्रीमती रूकमणी बाई के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।[5] रायपुर के जोरापारा गांव के निवासी स्व. श्री महावीर प्रसाद तिवारी की पत्नी श्रीमती भागीरथी बाई ने स्वतंत्रता के इस आन्दोलन में भूमिगत रहते हुए सहयोग किया वह स्वयं अनेक कष्ट झेलती गईं, कई दिन तो उन्हें बिना भोजन बिना पानी के रहना पड़ा किन्तु फिर भी वह स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों की निरंतर मदद करती रहीं। इसी प्रकार श्रीमती भागीरथी बाई ने भी स्वतंत्रता सेनानियों की मदद की तथा घर–घर जाकर आन्दोलन का प्रचार किया।

मध्यप्रांत की यात्राओं के दौरान गाँधीजी रायपुर से धमतरी और करूद पहुँचे तथा वहाँ भी ग्राम निवासियों व विशेषकर महिलाओं ने उन्हें तिलक फण्ड के लिये अपने रूपये पैसे, जेवर तक अर्पित कर दिये, गाँधीजी ने यहाँ भाषण देते हुए कहा कि देश की उन्नति तभी संभव है, जब इस देश की नारी जागृत होगी।[6]

मध्यप्रान्त के छिन्दवाड़ा जिले में भी गाँधीजी का आगमन हुआ। वे अली बंधुओं के साथ छिन्दवाड़ा पहुँचे तथा उनके साथ मिलकर मस्जिद में नमाज पढ़ी। दोपहर गाँधीजी ने महिलाओं की एक सभा में भाषण दिया जिसे सुनने के लिये आसपास के गांवों की महिलायें कोसों पैदल चलकर बड़ी संख्या में एकत्रित हुई थीं। इस सभा में गाँधीजी ने तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए महिलाओं से दान की अपील की जिसका प्रत्युत्तर महिलाओं ने बड़ी संख्या में धन और आभूषण देकर किया, किन्तु 1920–24 के दौरान यहाँ किसी महिला विशेष का नाम उपलब्ध नहीं है।

नागपुर कांग्रेस के बाद महात्मा गाँधी, माता कस्तूरबा, महात्मा भगवानदीन और श्री अर्जुनलाल सेठी का सिवनी में जब पहला आगमन हुआ तो इस अवसर पर आयोजित आम सभा में उन्होंने अंग्रेजी सरकार और उसके दमनचक्र के विरूद्ध प्रभावशाली भाषण दिये जिसका जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा, यहाँ तक कि भाषण देने के आरोप मे इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और कड़ी सजा दी गई।[7] इन नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में संपूर्ण सिवनी में हड़ताल हो गयी स्कूल भी बन्द हो गये तथा जुलूस भी निकाले गये।

गाँधीजी की जबलपुर यात्रा में माता कस्तूरबा भी पधारी थीं और सदैव की तरह गाँधीजी का भाषण पहले स्त्रियों की सभा में हुआ किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि जबलपुर में पहले इतनी बड़ी संख्या में महिलाएँ एकत्रित नहीं हुई थी, लोग गाँधीजी को देखने और सुनने के लिये बड़े उत्सुक थे।[8] स्व. श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस असहयोग आन्दोलन में भले ही प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया था किन्तु ओजस्वी कविताओं के

माध्यम से राष्ट्रीयता जागृत करने में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। ''खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी'' की कवियित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की इस कविता ने पूरे देशभर में लोकप्रियता तो प्राप्त की ही थी साथ ही इस ओजस्वी कविता ने महिलाओं में एक नवीन चेतना का विकास किया। जबलपुर में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के अतिरिक्त श्रीमती गुजरिया बाई एवं श्रीमती तुलसीबाई का नाम भी उल्लेखनीय है।[9]

इस कड़ी में अगली यात्रा गाँधीजी ने पूर्वी निमाड़ (वर्तमान खण्डवा) जिले में की। जिले में एक भाषण में गांधीजी ने खादी के प्रयोग पर जोर देते हुये कहा कि बालिकाएँ जो हैं वे गोरों वाले विदेशी वस्त्र पहनकर मेरा स्वागत करती हैं अर्थात् अभी भी आप लोग मुझे आश्वासन दे रहे हैं जबकि मुझे तो स्वदेशी प्रचार और खादी के बारे में दृढ़ निश्चय चाहिए। खण्डवा जिले से किसी विशेष महिला नेतृत्वकर्ता का नाम असहयोग आन्दोलन के दौरान उपलब्ध तो नहीं हो सका है किंतु तथ्यों के आधार पर यह पाया गया है कि सन् 1920–21 में शराबबंदी, तिलक स्वराज्य फण्ड, राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना आदि आन्दोलन आरंभ हुए, जिनमें अगर पुरूषों ने अपना वर्चस्व न्यौछावर किया है तो महिलाओं के जत्थों को भी लाठियाँ खाने के बावजूद भी पिकेटिंग तथा जुलूसों में आगे ही पाया गया।[10]

भोपाल की यात्रा गाँधीजी ने सितम्बर 1921 में की, जिसमें कुमारी मीरा बेन, श्री सी.एफ. एण्ड्रूज तथा महादेव भाई देसाई जी भी उनके साथ ही थे। भोपाल की इस सभा में गाँधीजी को नागरिकों की ओर से खादी कार्य के लिए 1035 रूपयों की थैली भेंट की गयी तथा यहाँ के भाषणों में गाँधीजी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर अधिक जोर दिया तथा अस्पृश्यता निवारण का संदेश दिया।[11] जिले में बाई अम्मान का नाम विशेष महत्व रखता है जिस काल में उन्होंने एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा जाकर महिलाओं को जागृत करने का कार्य किया उस काल में महिलाओं, विशेषकर मुस्लिम महिलाओं को तो पर्दे से निकलने तक की अनुमति नहीं होती थी। अतः बाई अम्मान के योगदान को विशेषकर भोपाल में जिस चतुराई से उन्होंने अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंककर असहयोग का गुप्त संदेश सैनानियों तक पहुँचाया वह सराहनीय था। इसके अतिरिक्त सतना जिले से श्रीमती वीरकुँवर तथा मैहर से श्रीमती शांतिबाई का नाम उल्लेखनीय रहा।[12]

एक अन्य प्रमुख जिला शहडोल रहा जिसके अनेक स्थानों में स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियाँ संचालित होती रहीं और राष्ट्रीय स्तर पर इस जिले का योगदान अद्वितीय रहा। इस राज्य में स्वतंत्रता आन्दोलन का सूत्रपात करने वालों में कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह का नाम प्रमुख है। 1921 में बुढ़ार के नवयुवकों के मन में स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूकता पैदा हो चुकी थी जिससे बुढ़ार में सेवा समिति की स्थापना हुई और गाँधी टोपी का प्रसार हुआ था, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गयी। इस तरह मध्यप्रान्त का शहडोल जिला भी स्वतंत्रता आन्दोलन में निरंतर गतिशील रहा।

सम्पूर्ण राष्ट्र में जहाँ प्रत्येक आन्दोलनों में उ.प्र., बंगाल, दक्षिण भारत की महिलाओं के नाम निर्णायक भूमिका अदा कर रहे थे, वहीं उन्हीं के कार्यों और देश के प्रति उनकी अगाध निष्ठा से प्रेरित होकर मध्यप्रांत की महिलायें की उत्साहित होकर सक्रिय हो गयी। उज्जैन संभाग से रतलाम, देवास, मन्दसौर, शाजापुर आदि में भी असहयोग की सप्त सूत्री कार्यक्रमानुसार बहुत अधिक सक्रियता तो नहीं थी, किंतु यह क्षेत्र इस आन्दोलन से अछूते भी नहीं थे, विशेषकर उज्जैन की महिलायें तो न केवल सत्याग्रहों में सक्रिय रहीं अपितु उन्होंने कई बार जेल यात्रायें भी कीं। रतलाम क्षेत्र में तो असहयोग आन्दोलन का प्रभाव इतना अधिक था कि खादी आन्दोलन और विदेशी वस्त्र बहिष्कार की मुहिम को जारी रखते हुए खादी उत्पादन केन्द्र श्री सुदर्शन चक्र के नाम से स्थापित किया गया और इसी क्रम में यहाँ विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार भी किया गया।[13]

असहयोग आन्दोलन को समर्थन देने में अगला योगदान ग्वालियर संभाग के मुरैना, भिण्ड, दतिया, शिवपुरी तथा गुना का रहा। महात्मा गाँधी के ''करो या मरो'' के नारे ने मुरैना जिले में एक नवीन चेतना का विकास किया था और यहाँ के लोगों ने यथाशक्ति अपना योगदान दिया किंतु 1920 के आन्दोलन के समय यहाँ अधिक चेतना व्यापत नहीं थी फिर भी यह क्षेत्र इस आन्दोलन से पूर्णतः अछूता नहीं रहा था। इसी प्रकार सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर तथा टीकमगढ़ का भी योगदान रहा।[14]

राष्ट्रीय स्तर पर इस आन्दोलन में अपनी अप्रतिम एवं निर्णायक भूमिका निभाने वाले विभिन्न नेताओं, जिसमें मुहम्मद अली जिन्ना, मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, मौलाना आजाद, राजगोपालाचारी, राजेन्द्र प्रसाद तथा सरदार पटेल, को गिरफ्तार कर लिया गया। आन्दोलन के दौरान प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये, जिन्हें भारत में सर्वत्र कड़े विरोधों का सामना करना पड़ा। 1 फरवरी, 1922 को गाँधीजी ने वायसराय को अल्टीमेटम भेजा

कि अगर 7 दिनों के भीतर राजनीतिक बंदियों को रिहा नहीं किया जाता और प्रेस पर से सरकार का नियंत्रण समाप्त नहीं होता, तो वे करों की नाअदायगी समेत सामूहिक रूप से बारदोली से सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरंभ कर देंगे। किंतु सप्ताह समाप्त होने के पूर्व ही उत्तरप्रदेश के गोरखपुर के एक कस्बे चौरी–चौरा में पुलिस ने राजनीतिक जुलूस पर गोलीबारी की। इसके परिणामस्वरूप जनता ने 5 फरवरी, 1922 को चौरी–चौरा पुलिस थाने पर हमला करके 22 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी। चौरी–चौरा की घटना से महात्मा गाँधी को यह विश्वास हो गया कि देश अभी व्यापक सविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिए तैयार नहीं है। अतः 12 फरवरी, 1922 को बारदोली में हुई कांग्रेस की बैठक में आन्दोलन को स्थगित करने का निर्णय लिया गया। 13 मार्च, 1922 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। न्यायाधीश ब्रमफील्ड द्वारा गाँधीजी को असंतोष भड़काने के आरोप में 6 वर्ष की सजा सुनाई गई।[15]

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि असहयोग आन्दोलन के आकस्मिक स्थगन से सारा देश स्तब्ध रह गया। अचानक असहयोग आंदोलन को बन्द कर देने से ऐसा लगा की देश जीती हुई बाजी हार गया। आन्दोलन के स्थगित होने के शीघ्र बाद ही पूरे देश में साम्प्रदायिकता का बोलबाला हो गया। जगह–जगह सांप्रदायिक दंगे हुये। अतः असहयोग आन्दोलन जिस उद्देश्य को लेकर चला था उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सका। लेकिन इसकी चरम उपलब्धि तत्कालीन हानियों से कहीं अधिक थी। कांग्रेस की स्थिति पहले की अपेक्षा काफी सुदृढ़ हो गयी और उसके बाद इसकी शक्ति बढ़ती ही गई। इसने स्वतंत्रता की प्रबल शक्ति जागृत की तथा औपनिवेशिक चुनौती के लिये जनता को प्रोत्साहित किया। इस आन्दोलन में मध्यप्रांत के विभिन्न हिस्सों से जनमानस ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया तथा महिलाओं ने भी अपने शौर्य एवं पराक्रम से अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। असहयोग आन्दोलन के दौरान मध्यप्रांत में गाँधी जी के दौरे एवं उनके उत्तेजक एवं प्रभावशाली भाषणों के माध्यम से आम–जनमानस, विशेषतः महिलाओं में नवचेतना संचार हुआ एवं उन्होंने असहयोग आन्दोलन में अपनी अभूतपूर्व भागीदारी निभाई एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का निर्भय होकर सहयोग एवं समर्थन किया। असहयोग आन्दोलन पहला आन्दोलन था जिसने जनता को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। परिणामतः भारतवासियों में स्वेदशी वस्तुओं के प्रति प्रेम जागृत हुआ एवं उन्होने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया एवं सार्वजनिक प्रदर्शन भी किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद – ''आधुनिक भारत का इतिहास'', हिन्दी संस्थान, लखनऊ, (उ.प्र.), पृ. 252
2. गौतम, पी.एल. – ''आधुनिक भारत'', हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, राजस्थान, 1998, पृ. 195
3. चन्द्र, विपिन – ''आधनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद'', नई दिल्ली, 2005 पृ. 148
4. मिश्रा, द्वारिकाप्रसाद (रायपुर सं.) – मध्यप्रदेश के स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास, पृ. 292
5. सक्सेना, सुधीर – मध्यप्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी (1999) पृ. 204
6. ''मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक'', भाषा संचालनालय रायपुर (सं.), पृ. 76
7. सक्सेना, शालिनी – ''स्वतंत्रता आन्दोलन में मध्यप्रांत की महिलाएँ'', हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, (म.प्र.), 2001, पृ. 38–39
8. शर्मा, डॉ. वसुंधरा – ''मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन'', पृ. 118
9. तिवारी, रामेन्द्र – ''स्वतंत्रता संग्राम की झलक : जबलपुर के झरोखे से'', 2001, पृ. 16
10. सक्सेना, शालिनी –पूर्वोक्त– पृ. 40
11. चाँदीवाला, बृजभूषण – '' महात्मा गांधी की दिल्ली डायरी'', पृ. 91
12. सक्सेना, शालिनी –पूर्वोक्त– पृ. 48
13. नागपाल, श्री ओम – ''भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, संवैधानिक विकास और संविधान'', पृ. 87
14. ''मध्यप्रदेश और गांधीजी'' – सूचना प्रकाशन, पृ 10
15. मिश्रा, द्वारिकाप्रसाद –पूर्वोक्त– पृ. 321